पहला अध्याय
वर्ण-विचार और संज्ञाएँ

भाषा की मूल ध्वनियों तथा उन ध्वनियों के प्रतीकस्वरूप लिखित चिह्नों को वर्ण कहते हैं। प्राकृत की वर्णमाला संस्कृत की अपेक्षा कुछ भिन्न है। ऋ, ऌ, ऐ और औ स्वर प्राकृत में ग्रहण नहीं किये गये हैं। व्यंजनों में श, ष और स इन तीन वर्णों में से केवल स का ही प्रयोग मिलता है। न का प्रयोग विकल्प से होता है। अतः प्राकृत की वर्णमाला में निम्न वर्ण पाये जाते हैं।

स्वर—जिन वर्णों के उच्चारण में अन्य वर्णों की सहायता अपेक्षित नहीं होती, वे स्वर कहलाते हैं। प्राकृत में स्वर दो प्रकार के हैं—ह्रस्व और दीर्घ।

अ, इ, उ, ए, ओ (ह्रस्व)।

आ, ई, ऊ (दीर्घ)।

व्यंजन—जिन वर्णों के उच्चारण करने में स्वर वर्णों की सहायता लेनी पड़ती है, वे व्यंजन कहलाते हैं। प्राकृत में व्यंजनों की संख्या ३२ है।

क	ख	ग	घ	ङ	(क वर्ग)
च	छ	ज	झ	ञ	(च वर्ग)
ट	ठ	ड	ढ	ण	(ट वर्ग)
त	थ	द	ध	न	(त वर्ग)
प	फ	ब	भ	म	(प वर्ग)
	य	र	ल	व	(अन्तःस्थ)
			स	ह	(ऊष्माक्षर)
				ं	(अनुस्वार)

अनुस्वार को भी व्यंजन माना गया है, यतः अनुस्वार म् या न् का रूपान्तर है। प्राकृत में विसर्ग की स्थिति नहीं है। विसर्ग सर्वदा ओ या ए स्वर में परिवर्तित हो जाता है। असंयुक्त अवस्था में ङ और ञ का व्यवहार भी नहीं पाया जाता है। अतः व्यंजन ३० हैं।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

वर्णों के उच्चारण

कण्ठ्य—अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ और ह का उच्चारण स्थान कंठ है। अतः ये वर्ण कंठ्य कहलाते हैं।

तालव्य—इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ और य का उच्चारण स्थान तालु है, अतः ये वर्ण तालव्य कहलाते हैं।

मूर्धन्य—ट, ठ, ड, ढ, ण और र का उच्चारण स्थान मूर्धा है, अतः ये वर्ण मूर्धन्य कहलाते हैं।

दन्त्य—त, थ, द, ध, न, ल और स का उच्चारण स्थान दन्त है, अतः ये वर्ण दन्त्य कहलाते हैं।

ओष्ठ्य—उ, ऊ, प, फ, ब, भ और म का उच्चारण स्थान ओष्ठ है, अतः ये वर्ण ओष्ठ्य कहलाते हैं।

अनुनासिक—ञ, म, ङ, ण, न और म का उच्चारण स्थान नासिका है, अतः ये वर्ण अनुनासिक कहलाते हैं।

ऐ और ए का कण्ठ, तालु, औ और ओ का कंठ–ओष्ठ, वकार का दन्तोष्ठ और अनुस्वार का नासिका उच्चारण स्थान है।

प्रयत्न विचार

वर्णोच्चारण के लिए ध्वनियंत्र को जो आयास करना पड़ता है, उसे प्रयत्न कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है–आभ्यन्तर और बाह्य।

वर्णोच्चारण के पूर्व हृदय में जो आयास–प्रयत्न होता है, उसे आभ्यन्तर और मुख से वर्ण निकलते समय जो आयास करना पड़ता है, उसे बाह्य प्रयत्न कहते हैं। आभ्यन्तर प्रयत्न का अनुभव बोलने वाले को ही होता है, किन्तु बाह्य का अनुभव श्रोता भी करते हैं।

आभ्यन्तर प्रयत्न पाँच प्रकार का होता है–स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषद्विवृत, विवृत और संवृत।

क से म पर्यन्त वर्णों का स्पृष्ट; य, र, ल और व का ईषत्स्पृष्ट; स और ह का ईषद्विवृत और स्वरों का विवृत प्रयत्न होता है। ह्रस्व उकार का प्रयोगावस्था–परिनिष्ठित सिद्धरूप में संवृत प्रयत्न होता है; किन्तु प्रक्रिया दशा–साधनावस्था, में विवृत प्रयत्न ही रहती है।

बाह्य प्रयत्न ग्यारह प्रकार का है–विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त ओर स्वरित।

जिन वर्णों का उच्चारण करते समय कण्ठ का विकास हो, उन्हें विवार; जिनके उच्चारण में कंठ का विकास न हो, उन्हें संवार; जिनका उच्चारण करते

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

समय श्वास चलती रहे, उन्हें श्वास; जिनका उच्चारण नाद से हो, उन्हें नाद; जिन वर्णों का उच्चारण करते समय गूँज हो, उन्हें घोष; जिनके उच्चारण में गूंज न हो, उन्हें अघोष; जिनके उच्चारण में प्राणवायु का अल्प उपयोग हो, उन्हें अल्पप्राण एवं जिनके उच्चारण में प्राणवायु का अधिक उपयोग हो, उन्हें महाप्राण कहते हैं।

क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ और स का विवार, श्वास और अघोष प्रयत्न है।

ग, ज, ड, द, ब, घ, झ, ढ, ध, भ, ण, न, य, र, ल, व और ह का संवार, नाद और घोष प्रयत्न है।

वर्गों के प्रथम, तृतीय और पंचम वर्ण तथा य, र, ल, व का अल्पप्राण प्रयत्न है।[१]

वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ वर्ण तथा स और ह का महाप्राण प्रयत्न है।[२]

क से म पर्यन्त पच्चीस वर्ण स्पर्श कहलाते हैं।[३] इनके उच्चारण में जीभ का अगला, पिछला या मध्यभाग कंठ, तालु प्रभृति स्थानों का स्पर्श करता है। अतः ये वर्ण स्पर्श वर्ण कहलाते हैं।

य, र, ल और व ये चार वर्ण अन्तस्थ कहलाते हैं।[४] इनके अन्तःस्थ कहलाने का कारण यह है कि ये चारों स्पर्श और ऊष्म के मध्यवर्ती हैं।

स और ह ऊष्म वर्ण हैं। इन वर्णों के उच्चारण में अधिक वायु निकलती है, अतः ये ऊष्म कहलाते हैं।

अनुस्वार की अयोगवाह संज्ञा है।

क से म पर्यन्त जिन वर्णों को स्पर्श कहा गया है, उनके उच्चारण के लिए आने वाला श्वास स्वरतन्त्रियों के प्रभाव से घोष या अघोष होकर आता है। अतः इन पाँचों में प्रत्येक के मोटे-मोटे दो भेद हो गये-(१) घोष स्पर्श और (२) अघोष स्पर्श। अघोष स्पर्श के भी प्राणत्व के आधार पर दो भेद हैं-(१) अघोष अल्पप्राण स्पर्श और (२) अघोष महाप्राण स्पर्श। घोष स्पर्श के तीन भेद हैं-(१) घोष अल्पप्राण स्पर्श (२) घोष महाप्रण स्पर्श और (३) घोष अनुनासिक। घोष अनुनासिकों के उच्चारण में कौवा (कण्ठपिटक) बीच में रहता है, जिसके फलस्वरूप थोड़ी श्वास मुँह और नाक दोनों से निकलती है। अनुनासिक वर्णों के अतिरिक्त अन्य स्पर्शों के उच्चारण में कौवा नासिकाविवर

१. वर्गाणां प्रथमतृतीयपञ्चमा यणश्चाल्पप्राणाः। २. वर्गाणां द्वितीयचतुर्थौ शलश्च महाप्राणाः।
३. कादयो मावसानाः स्पर्शाः। ४. यणोऽन्तःस्थाः।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

को बन्द किये रहता है, अतः श्वास केवल मुँह से निकलती है।

इस प्रकार कण्ठ्य, मूर्धन्य, तालव्य, दन्त्य और ओष्ठ्य इन पाँचों स्पर्श वर्गों में से प्रत्येक वर्ग के निम्न पाँच भेद होते हैं–

१. अघोष अल्पप्राण–क, त, प आदि।

२. अघोष महाप्राण–ख, थ, फ आदि।

३. घोष अल्पप्राण–ग, द, व आदि।

४. घोष महाप्राण–घ, ध, भ आदि।

५. अनुनासिक या घोष अल्पप्राण अनुनासिक–ङ, न, म आदि।

स्व संज्ञा–जिस वर्ण का जिस वर्ण के साथ तालु आदि स्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न एक हो, वह वर्ण स्व या सवर्ण संज्ञक होता है।[१]

विभक्ति संज्ञाएँ–सु आदि विभक्तियों में अन्त्य इत्संज्ञक वर्ण के साथ उच्चरित आदि वर्ण अपने तथा मध्यवर्ती वर्णों का भी बोधक होता है। जैसे प्रथमा विभक्ति में सु और जस् की सस् संज्ञा, द्वितीया विभक्ति में अम् और शस् की अस् संज्ञा, तृतीया विभक्ति में टा और भिस् की टास् संज्ञा, चतुर्थी विभक्ति में ङे और भ्यस् की ङेस् संज्ञा, पंचमी में ङसि और भ्यस् की ङसिस् संज्ञा, षष्ठी में ङस् और आम् की ङम् संज्ञा एवं सप्तमी में ङि और सुप् की ङिप् संज्ञा होती है।[२]

ह संज्ञा[३]–ह्रस्व वर्णों की 'ह' संज्ञा होती है।

दि संज्ञा[४]–दीर्घ वर्णों की 'दि' संज्ञा होती है।

स संज्ञा[५]–समास की 'स' संज्ञा होती है।

शु संज्ञा[६]–श, ष और स की 'श' संज्ञा होती है।

खु संज्ञा[७]–आदि वर्ण की 'खु' संज्ञा होती है। यथा ''खोः कन्दुक–'' इत्यादि में खु शब्द से आदि वर्ण का बोध होता है।

स्तु संज्ञा[८]–दो संयुक्त व्यञ्जनों की 'स्तु' संज्ञा होती है।

ग संज्ञा[९]–गणप्रधान जो आदि शब्द होता है, उसकी 'ग' संज्ञा होती है। जैसे–'क्लीवे गुणगाः' में गुणगा शब्द गुणादि का बोधक है।

फु संज्ञा[१०]–शब्द के द्वितीय वर्ण की 'फु' संज्ञा होती है।

---

१. तुल्यस्थानस्य प्रयत्नः स्वः १।१।१७ हे.।
२. सुप्स्वादिरन्त्यहला १।१।४ त्रि.।
३. हो ह्रस्वः १।१।५ त्रि.।
४. दि दीर्घः १।१।६ त्रि.।
५. सः समासः १।१।७ त्रि.।
६. शषसाः शुः १।१।८ त्रि.।
७. आदिः खुः १।१।९ त्रि.।
८. संयुक्तं स्तु १।१।१२ त्रि.।
९. गो गणपरः १।१।१० त्रि.।
१०. द्वितीयः फुः १।१।११ त्रि.।
११. तु विकल्पे १।१।१३ त्रि.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

तु संज्ञा[११]–विकल्प विधान की 'तु' संज्ञा होती है।

बहुल संज्ञा[१]–विकल्प 'बहुल' संज्ञा भी होती है।

रित् संज्ञा[२]–रेफ की 'रित्' संज्ञा होती है।

लुक् संज्ञा–लोप की 'लुक्' संज्ञा होती है।

उद्वृत्त स्वर व संज्ञा[३]–व्यंजन घटित स्वर से व्यंजन का लोप हो जाने पर जो स्वर शेष रह जाता है, उसकी 'उद्वृत्त स्वर' संज्ञा होती है।

❑ ❑ ❑

१. बहुलम् १।१।१७ त्रि.।

२. रिता द्वित्वल् १।१।८५ त्रि.।

३. स्वरस्योद्वृत्ते ८।१।८ हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY